मूर्त्तिपूजन का निषेध करनेवाले दयानंद प्रभृत लोगों के गले की

# दूषणमालिका

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण कमांक 1689
दयानन्द महिला महावि

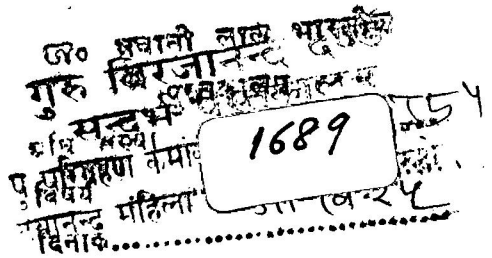




सं० १९२७
1870

द · व · ५
आ - स -

श्री श्रीवल्लभोविजयते

# भूमिका

अथ दयानंदनामी क्या जानै कौन जाति वा किस आश्रम के कोई नग्न पुरुष सब देशों में भ्रमण करते हुए सनातन सधर्म्म रूपी सूर्य्य को राहु की भाँति ग्रास करते हुए मूर्खों और आलस्य से भरे हुए जीवों के हृदय-वस्त्र को अपने रंग में रंगते हुए इसी बहाने अपना नाम लोगों में विदित करते हुए और अपने वाक्य बना के आडम्बर से साधु लोगों का हृदय दहन करते हुए काशी में आये और दुर्गाकुण्ड निवासियों के सहवासी हुए और उनने जो व्यर्थ उपद्रव किये वह सब पर विदित हैं अब उनने एक छोटी सी पुस्तक छपवाकर लोगों पर यह विदित करना चाहा है कि मैं हारा नहीं इस से मैंने ऐसा विचार किया कि ऐसे मनुष्य से सम्भाषण करना उचित नहीं और पत्रद्वारा शास्त्रार्थ करना जिसमें सब लोगों पर सदसत् का प्रकाश और हारने जीतने का निश्चय हो जाय इस हेतु यह दूषणमालिका उनके गले में पहिनाई जाती है। उनको उचित है कि इन सब प्रश्नों का प्रति पद उत्तर दें और इसी प्रकार से बराबर पत्रद्वारा शास्त्रार्थ होय और इतने प्रश्नों का एक जीतने के इश्तिहार की भाँति उत्तर न दिया जाय क्योंकि इन शब्दों के प्रति शब्द का उत्तर न देने से परास्त समझे जाँयगे और प्रश्नोत्तर करते करते जो थक जाय और जिसकी बुद्धि में उत्तर की युक्ति न आवै वह हारा समझा जायगा।

१८७० ई० }
काशी } हरिश्चंद्र

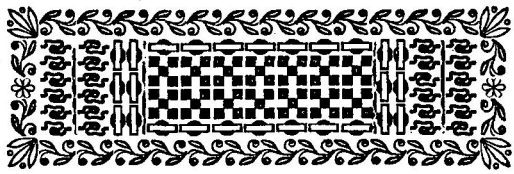

# दूषणमालिका

१. आपने जो पुस्तक छपवाई है उसमें वेद के मंत्र हैं सो वेद के मंत्र शूद्रों तथा म्लेच्छादिकों के हाथ में देने से आप को दोष हुआ कि नहीं।

२. आप कौन आश्रम और किस जाति के हैं और किस धर्म को मानते हैं जो कहिये कि हम वेदधर्म को मानते हैं तो वेदधर्म को मानना इस में क्या प्रमाण और ख्रीष्ट और मुहम्मदी मत को न मानना इसमें क्या प्रमाण। जो कहिये कि हम उसी कुल में उत्पन्न हैं इससे यही धर्म मानना योग्य है तो आप मूर्त्ति पूजक के वंश में हो कि नहीं।

३. जो आप कहैं कि हम अमुक जाति के थे अब योगी हुए हैं तो आप के पिता पुरुषा सब उसी जाति में उत्पन्न हुए इसको किसने देखा है और उस में क्या प्रमाण है।

४. जो कहिये कि शिष्टाचार प्रमाण है और हम सुनते आते हैं कि हम अमुक वंशीय हैं तो इसी भाँति मूर्त्ति पूजनादि शिष्टाचार क्यों नहीं मानते।

५. जो कहो कि वेद नहीं है तो दयानंद स्वामी अमुक वंश में भये यह वेद में कहाँ है।

६. आपने सम्पूर्ण वेद देखा है।

७. जो कहिये कि वेद बहुत है और लुप्त प्राय है इस से सब नहीं देखा है तो वेद में अमुक वस्तु नहीं यह कहना व्यर्थ हो जाता है।

८. जो आप वेद जानते हैं तो उन के भेद कहिये।

९. बारहो उपनिषत् किन किन ब्राह्मणों वा संहिता के अंत भाग है।

१०. जो कहिये कि अमुक के हैं तो वे सब वेद के भीतर हैं या बाहर। जो भीतर हैं तो अश्वमेध प्रकरण में जब एक बेर सब वेदों को गिनाय गये तो फिर वेद के बाहरवाली कौन ब्रह्मविद्या थी जिसे पुराण के नाम से चर्व्वित चर्व्वण किया।

११. अश्वमेध प्रकरण में पुराण शब्द का अर्थ ब्रह्मविद्या है इस में कौन सा प्रमाण है और बसुरुद्रादि शब्द का अर्थ परमेश्वर ही है लिंगधारी देवता नहीं इस में क्या प्रमाण और वेद में जहाँ सहस्रनयन वज्रपाणि इत्यादि विशेषण दिये वहाँ क्या व्यवस्था और जो व्यवस्था आप करें वही ठीक इस में क्या प्रमाण।

१२. और भी कई स्थान पर पुराण का अर्थ प्राचीन और इतिहास ही है इस का प्रमाण।

१३. ऋग्वेद के कै विभाग हैं और इसमें कितनी शाखा और कितनी संहिता और कितने उपनिषत् और कितने ब्राह्मण इत्यादि हैं कहिये।

१४. और इन सब के आदि अंत के मंत्र सूचना के हेतु कहिये और इन की पुस्तकें कहा लब्ध होंगी और आपने इन सबों को किससे अधीत किया है।

१५. इसी भाँति यजुर्वेद का सब वृतांत कहिये।

१६. ऐसेही सामदेव का कहिये।

१६. इसी प्रकार ब्यौरेवार अथर्वेद का संपूर्ण वृतांत कहिये।

१८. जो कहियेगा कि एक मनुष्य सब नहीं जान सकता इससे हम सब नहीं जानते तो ७ वें प्रश्न का दोष आप के माथे पड़ेगा।

१६. इन चारों वेदों को कौन स्वर से पढ़ना चाहिये और उन के स्वर की रीति वेद में किस स्थान पर लिखी है

२०. वे सब स्वर जो आर्ष रीति के हैं सोई हैं या कुछ पलट गये। जो कुछ पलट गये तो इन के पलट जाने में क्या प्रमाण और जो वेही हैं तो उन के वे ही होने में और न पलट जाने में क्या प्रमाण।

२१. वेदों के या मंत्रों के आप जो अर्थ करें सोई अर्थ है दूसरा अर्थ नहीं इस में क्या प्रमाण।

२२. आपने ११ ग्रंथ आर्ष माने उनके अतिरिक्त ग्रंथ अप्रमाण हैं इसमें क्या प्रमाण।

२३. ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है इसमें क्या प्रमाण और जो आयुर्वेद प्रचलित है वही प्राचीन है इसमें निश्चायक क्या।

२४. जो कहिये कि उसका प्रमाण उसी में है तो सब पुराणों में भी पुराणों की प्रशंसा है इस हेतु इस में श्रुति प्रमाण दीजिये।

२५. चरक आर्ष है इस में श्रुति प्रमाण दीजिये।

२६. सुश्रुत आर्ष है इस में श्रुति प्रमाण दीजिये।

२७. धनुर्वेद ही यजुर्वेद का उपवेद है इस में प्रमाण।

२८. धनुर्वेद का अब कौन ग्रंथ मिलता है बताइये और जो मिलता है तो वही आर्ष है इस में प्रमाण दिखलाइये।

२९. जो कहिये कि धनुर्वेद के ग्रंथ लुप्त होगये तो आप इस विषय के अज्ञ ठहरे तो फिर ७ प्रश्न का दोष पड़ा।

३०. सामवेद का उपवेद गान है इस में श्रुति प्रमाण दीजिये।

३१. *गान विद्या के कौन ग्रंथ आर्ष इस में भी श्रुति पूर्व्वक कहो।*

३२. अथर्व्ववेद का उपवेद शिल्प है इस में श्रुति प्रमाण दीजिये।

३३. शिल्प विद्या में कौन-कौन ग्रंथ मिलते हैं और वे श्रुति संमत भी हैं इस में प्रमाण कहिये।

३४. चारो उपवेद जो आप न जानते होंगे तो उस विषय के अज्ञ होने से ७ प्रश्न का दोष पड़ैगा।

३५. शिक्षा का कौन ग्रंथ है और उसके आर्ष होने में श्रुति प्रमाण दीजिये।

३६. कल्प जो प्रचलित है सोई आर्ष है इस में श्रुति प्रमाण दीजिये और कल्प के कौन ग्रंथ मिलते हैं कहिये !

३७. अष्टाध्याई आर्ष है इस में श्रुति प्रमाण कहिये।

३८. महाभाष्य प्रमाण है इस में श्रुति प्रमाण कहिथे।

३९. निरुक्त कौन ग्रंथ प्रचलित है और वही आर्ष भी इसमें युक्ति और प्रमाण दीजिये।

४०. छंद के कौन ग्रंथ आर्ष हैं और उनके आर्ष होने में क्या प्रमाण और उनके स्वरूप बदले नहीं इसमें श्रुति प्रमाण दीजिये।

४१. भृगुसंहिता आर्ष है इस में श्रुति प्रमाण दीजिये और प्रचलित भृगुसंहिता वही प्राचीन भृगुसंहिता है इस में युक्ति कहिये।

४२. ये बारह उपनिषत् वेदांत शास्त्र हैं यह बात कहाँ लिखी है इस में श्रुति प्रमाण दीजिये।

४३.शारीरिक सूत्र आर्ष हैं इसमें प्रमाण दीजिये और यह वही सूत्र है जो व्यास ने कहा इस में युक्ति कहिये।

४४. कात्यायन आदि सूत्र आर्ष हैं इन में प्रमाण कहिये और आदिपद से आप और किसे लेते हैं।

४५. योगभाष्य आर्ष है इसमें श्रुति प्रमाण दीजिये।

४६. मनुस्मृति यह वही है जो मनुने कहा है कालबल से बदली नहीं इस में युक्ति और श्रुति प्रमाण दीजिये।

४७. मनुस्मृति में जिन वाक्यों को आप नहीं मानते वे कल्पित हैं इस में प्रबल युक्ति और श्रुति प्रमाण दीजिये।

४८. यही महाभारत महाभारत है इसमें क्या प्रमाण और कौन सी युक्ति है।

४९. महाभारत में जिन श्लोकों को आप कल्पित मानते हैं उनके कल्पित और बाकी आर्ष होने में कौन प्रमाण और कौन सी युक्ति है।

५०. श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीभगवान ने जो "मे" मत् "मां" इन शब्दों से अपनी भक्ति यही परम धर्म है यह कहा है यह प्रमाण है या नहीं।

५१. जो कहो कि "मे" इत्यादि शब्दों का अर्थ आत्मा है तो और सौ स्थान पर जहाँ ये शब्द आये हैं वहाँ इनका आत्मा अर्थ क्यों नहीं

होता और दूसरे स्थान पर इन शब्दों का अर्थ अपना मुझे होय श्री-मद्भगवद्गीता ही में आत्मा अर्थ होय इसमें प्रमाण और प्रबल युक्ति दीजिये ।

५२. इन ऊपर के लिखे हुए ग्रंथों को आप सब भाँति से जानते हैं कि नहीं । जो सब को न जानियेगा तो सर्वज्ञ न ठहरियेगा और जो सर्व्वज्ञता बिना कोई बात कहियेगा तो ७ प्रश्न का दोष पड़ेगा ।

( इन ऊपर लिखे ग्रंथों को दयानंद प्रमाण मानते हैं )

५३. शिष्टाचार प्रमाण है कि नहीं ।

५४. जो कहिये कि जो अविरुद्ध अर्थात् वेद में लिखा है वह प्रमाण बाकी अप्रमाण तो आप नित्य उठ के सब वेद में लिखी हुई बातें करते हैं तो इन सब बातों को वेद से सिद्ध कीजिये कि आप मट्टी लगाते हैं सो वेद में कहाँ लिखा है, आप कौपीन धारण करते हैं यह कहाँ लिखा है, मैं एक दिन आप के दर्शन को गया था उस दिन आप बाजार के लड्डू और गुलाबजामुन खाते थे यह कहाँ लिखा है और उस दिन आप पीतल की लोटिया में जल पीते थे यह वेद में कहाँ लिखा है, आप मूर्ति पूजन और पुराणों का निषेध करते हैं यह कहाँ लिखा है ।

५५. जो कहिये यह तो मनुष्य की परंपरा प्राप्त ही है तो मूर्त्तिपूजन भी परंपरा प्राप्त है और शिष्टाचार अवश्य माननीय है और भी इसमें यह बात है कि मूर्त्ति पूजन का यद्यपि इस लोकमें कुछ फल न हो तथापि यदि परलोक में इसका फल सत्य हुआ तो आप फिर महापाप के भागी हुए और जो न सत्य हुआ तो हम लोगों की कुछ हानि नहीं बल्कि शिष्टाचार मानने से हमारी प्रशंसाही होगी ।

५६. ये यथा माम्प्रपद्यन्ते तां स्तथैव भजाम्यहं । इस भगवत् प्रतिज्ञा का क्या आशय है और यथा शब्द के अंतर देवतादिक और मूर्त्ति आदिक नहीं है इसमें प्रमाण पूर्व्वक नियम कहिये ।

५७. कालाग्निरुद्रोपनिषत् और तापनीयादिक श्रुति को आप क्यों नहीं मानते इस में श्रुति प्रमाण दीजिये ।

५८. सब त्रैवर्णी के वंश वेही हैं इस में क्या प्रमाण युक्ति पूर्व्वक कहिये ।

५९. सब वेद की पुस्तकें और उनके सब मन्त्र वेही हैं जो ईश्वर से निकले और इतने काल तक उनका स्वरूप कुछ नहीं बदला और ये सब वेही आर्ष अक्षर हैं इस में किसो ने कपोल कल्पित मन्त्र नहीं मिलाये इस में क्या प्रमाण और क्या युक्ति है कहिये।

६०. जो कहिये कि परंपरा प्राप्त हैं तो परंपरा प्राप्तता से वेद का तो निश्चय होय और परंपरा प्राप्त मूर्तिपूजन न माना जाय इसमें क्या प्रमाण और जो आप कहिए कि हम अपनी बुद्धि से समझते हैं कि ये वेद वेही हैं तो आप की बुद्धि ठीक है इसमें क्या प्रमाण और कौन सी युक्ति है।

६१. बात सौ पण्डित लोगों की मानैं कि एक आप की।

६२. जो कहिये कि ऐसा लिखा है कि एक पंडित सौ मूर्ख इतना होता है तो यह सब अज्ञ हैं हम पंडित हैं हमारी बात मानो तो इस में क्या प्रमाण है और क्या युक्ति है कि आपही पंडित हैं और ये सब अज्ञ हैं।

६३. वेद की पुस्तक पर जो कोई लात रखदे तो आप उसको दोष भागी कहेंगे तो वह दोष भागी कैसे होगा क्योंकि मूर्तियों में तो आप कहते हैं वहाँ क्या है पत्थर है तो उस वेद की पुस्तक में क्या है कागज और सियाही है जो हमारे हाथ की बनाई है और हमारे हाथ का लिखा है और अक्षर है सो एक प्रकार का संकेत है तो ऐसी जड़ वस्तु के अनादर से क्या दोष है। जो कहिए उन से वेही मन्त्र समझे जाते हैं जो हमारे धर्म्म स्वरूप हैं इस से आदर के योग्य हैं तो वे मूर्त्तियाँ जिन से हमारे पूज्य देवता के आकार का स्मरण होता है क्यों नहीं मानने के योग्य हैं।

६४. आप के पिता या किसी पुरुषा का मृत देह या उनके चित्र जिससे उनके स्वरूप का ज्ञान हो या कागज पर उनका नाम लिख के इन सब का अनादर करैं और इन पर बुरी वस्तु डालैं तो आप को बुरा लगैगा कि नहीं क्योंकि ये सब तो पृथ्वी तत्व के अंश और जड़ वस्तु हैं।

दयानन्द जी ने ४ प्रश्न किए थे इस हेतु उन के चार को चार बेर चौगुन करके चौंसठ प्रश्न किए हैं। इन का उत्तर उन को अक्षरशः देना उचित है।

—:※:—

सं०—अधुना, भारते तादृक् कीर्तिकर्तारो न संति, धवलधूलिः कुत आगमिष्यति ?

भ०—न ज्ञातं भवता ? चुंगीरचित राज मार्गतः।

सं०—भवतु राजमार्गतो, देवमार्गतो वा, किन्तु धवलधूलिः कुतस्तत्र निरंतरसेककर्मप्राचुर्यात् ?

भं०—आः ! यथार्थनामन्। नास्ति धूल्यभावः ? भारतेतु प्रायः सर्वेषामेव नेत्रेधूर्तप्रक्षेपिता धूलिर्मिलिष्यति।

सं०—तर्हि रक्तपौडरंकुतः मेडिकलहालात् ?

भ०—न बुद्धं भो भवता, रक्तपौडरं नाम अबीरः, रक्तंच तत् पौडरंचेति समासः।

सं०—रक्तं, पौडरं चेति किं वस्तुद्वयं ?

भं०—हा ! कीदृशो भवानल्पज्ञः ! नहि नहि, भो अन्यवर्णावच्छेदक रक्त वर्णावच्छिन्नः पौडर, नाम विशिष्टजातिबोधकः स्वाभाविकधर्मवान् तत्त्वरूपश्चूर्णविशेषः।

सं०—हंहो बुद्धं भवान् वैयाकरणी नैय्यायिकश्च।

भं०—सत्यमेव, यत्र शाद्धिकास्तत्र तार्किका इति हि प्रसिद्धिः।

सं०—भवतु रक्तपौडरं कुत आनेष्यसि, आर्याणां शिरसि तद्भावात् ?

भं०—हहहह, रक्त रजसोपि दारिद्र्यं मम नारीभंडस्य ! विशेषतः कुसुमाकरे ऋतौ ?

सं०—ज्ञातं—परंतु श्यामपंकं किं जयचंद्रादारभ्य आर्यकुलानर्थविग्रहमूलजनकानोमुखात्, भारत ललनाया अश्रुपूर्णान्नेत्राद्वा ?

भं०—नहि, गंधविक्रेतुर्हट्टपण्यात्।

सं०—अगरुजंकुत, आर्याणां मुख कांति समूहात् ?

भं०—पाचलात्काश्मीरात्। अस्माकं तु सर्वत्रैव गतिः, यतः कुतश्चिद् गृहीत्वा क्रीडिष्यामि।

सं०—क्रीड निश्चितो भवान्, कुत्रास्माकं देशचिंतातुराणां क्रीडाभिरुचिः ?

भं०—भवंतस्तु व्यर्थं देशचिंतातुराः भवच्चिंतया किं भविष्यति ? सुखं क्रीड, रमस्व, खेल, कूदखेलम् याति, पुनः क युवतयः, रोद-

नेन न किमपि भविता, भारतंतु होलिकाया मेव गंता। अत्रतु जमघंटो धूलिखेल एवावशिष्यति, तन्मारय अनंतांगलराजधानीशिखरोपरि पोलिटिकलचिंतासमूहं।

सं०—मित्र, परमयमुत्साहः किंमूलः इति जानासि वा त्वं ?

भं०—नहि, लोके तु शिष्टाचार एव सर्वकर्मप्रधानो मन्यते, अतः सएव मूलं भविता अथवा पश्यचाधुनिकं विद्यार्थिनं।

सं०—भवतु तथैव करोमि।*

—:❀:—

## स्वर्ग में विचार सभाका अधिवेशन

—:o:—

स्वामी दयानंद सरस्वती और बाबू केशवचंद्रसेन के स्वर्ग में जाने से वहाँ एक बेर बड़ा आंदोलन हो गया। स्वर्गवासी लोगों में बहुतेरे तो इनसे घृणा करके धिक्कार करने लगे और बहुतेरे इनको अच्छा कहने लगे। स्वग में भी 'कंसरवेटिव' और 'लिबरल' दो दल हैं। जो पुराने ज़माने के ऋषि मुनि यज्ञ कर करके या तपस्या करके अपने अपने शरीर को सुखा सुखा कर और पच पच कर मरके स्वर्ग गए हैं उन के आत्मा का दल 'कंसरवेटिव' है, और जो अपनी आत्माही को उन्नति से वा और किसी अन्य सार्वजनीन उच्च भाव संपादन करने से या परमेश्वर की भक्ति से स्वर्ग में गए हैं वे 'लिबरल' दल भक्त हैं। वैष्णव दोनों दल के क्या दोनों से खारिज थे, क्योंकि इनके स्थापकगण तो लिबरल दल के थे किंतु अब ये लोग 'रेडिकल्स' क्या महा महा रेडिकल्स हो गए हैं। बिचारे बूढ़े व्यासदेव को दोनों दल के लोग पकड़ पकड़ कर लेजाते और अपनी अपनी सभा का 'चेयरमैन' बनाते थे, और बेचारे व्यासजी भी अपने प्राचीन अव्यवस्थित स्वभाव और शील के कारण जिस की सभा में जाते थे वैसी ही वक्तृता कर देते थे। कंसरवेटिवों का दल प्रबल था; इसका मुख्य कारण यह था कि स्वर्ग के ज़मींदार इन्द्र, गणेश प्रभृति भी उनके साथ योग देते थे, क्योंकि बंगाल के ज़मीं-

* विद्यार्थी खं० १ सं० ८ फाल्गुन सं० १९३५।

दारों की भाँति उदार लोगों की बढ़ती से उन बेचारों को विविध सर्वोपरि बलि और भाग न मिलने का डर था।

कई स्थानों पर प्रकाश सभा हुई। दोनों दल के लोगों ने बड़े आतंक से वक्तृता दी। 'कंसरवेटिव' लोगों का पक्ष समर्थन करने को देवता लोग भी आ बैठे और अपने अपने लोकों में भी उस सभा की शाखा स्थापन करने लगे। इधर 'लिबरल' लोगों की सूचना प्रचलित होने पर मुसलमानी-स्वर्ग और जैन स्वर्ग तथा क्रिस्तानी-स्वर्ग से पैगंबर, सिद्ध, मसीह प्रभृति हिंदू-स्वर्ग में उपस्थित हुए और 'लिबरल' सभा में योग देने लगे। बैकुंठ में चारो ओर इसी की धूम फैल गई। 'कंसरवेटिव' लोग कहते, "छिः! दयानंद कभी स्वर्ग में आने के योग्य नहीं; इसने १ पुराणों का खंडन किया, २ मूर्ति पूजा की निंदा किया, ३ वेदों का अर्थ उलटा पुलटा कर डाला, ४ दश नियोग करने की विधि निकाली, ५ देवताओं का अस्तित्व मिटाना चाहा, ६ और अंत में संन्यासी होकर अपने को जलवा दिया। नारायण! नारायण! ऐसे मनुष्य की आत्मा को कभी स्वर्ग में स्थान मिल सकता है, जिस ने ऐसा धर्म विप्लव कर दिया और आर्यावर्त को धर्म वहिर्मुख किया।"

एक सभा में काशी के विश्वनाथ जी ने उदयपुर के एकलिंग जी से पूछा "भाई! तुम्हारी क्या मत मारी गई जो तुम ने ऐसे पतित को अपने मुँह लगाया और अब उसके दल के सभापति बने हौ, ऐसाही करना है तो जाओ लिबरल लोगों से योग दो।" एकलिंग जी ने कहा "भाई, हमारा मतलब तुम लोग नहीं समझे। हम उसकी बुरी बातों को न मानते न उसका प्रचार करते, केवल अपने यहाँ के जंगल की सफाई का कुछ दिन उसको ठेका दिया, बीच में वह मर गया अब उसका माल मता ठिकाने रखवा दिया तो क्या बुरा किया।"

कोई कहता "केशवचंद्रसेन! छि छि! इसने सारे भारतवर्ष का सत्यानाश कर डाला। १ वेद पुराण सब को मिटाया, २ क्रिस्तान मुसलमान सब को हिंदू बनाया। ३ खाने पीने का विचार कुछ न बाकी रक्खा। ४ मद्य की तो नदी बहा दी। हाय हाय ऐसी आत्मा क्या कभी बैकुंठ में आसकती है।"

ऐसे ही दोनों के जीवन की समालोचता चारों ओर होने लगी।

लिबरल लोगों की सभा भी बड़ी धूमधाम से जमती थी। किंतु इस सभा में दो दल हो गए थे, एक जो केशव की विशेष स्तुति करते, दूसरे वे जो दयानंद को विशेष आदर देते थे। कोई कहता, अहा धन्य दयानंद, जिसने आर्यावर्त के निंदित आलसी मूर्खों की मोह निद्रा भंग कर दी। हज़ारों मूर्खों को ब्राह्मणों के ( जो कंसरवेटिवों के पादरी और व्यर्थ प्रजा का द्रव्य खाने वाले हैं ) फंदे से छुड़ाया। बहुतों को उद्योगी और उत्साही कर दिया। वेद में रेल, तार, कमेटी, कचहरी दिखाकर आर्यों की कटती हुई नाक बचा ली। कोई कहता धन्य केशव ! तुम साक्षात् दूसरे केशव हो। तुम ने बंग देश की मनुष्य-नदी के उस वेग को, जो कृश्चन समुद्र में मिल जाने को उच्छलित हो रहा था, रोक दिया। ज्ञान कर्म का निरादर कर के परमेश्वर का निर्मल भक्ति मार्ग तुम ने प्रचलित किया।

कंसरवेटिव् पार्टी में देवताओं के अतिरिक्त बहुत लोग थे जिन में, याज्ञवल्क्य प्रभृति कुछ तो पुराने ऋषि थे और कुछ नारायणभट्ट, रघुनंदनभट्टाचार्य्य, मंडनमिश्र प्रभृति, स्मृति ग्रंथकार थे। सुना है कि विदेशी स्वर्ग के कुछ 'शीआ' लोगों ने भी इनके साथ योग दिया है।

लिबरल दल में चैतन्य प्रभृति आचार्य, दादू, नानक, कबीर प्रभृति भक्त और ज्ञानी लोग थे। अद्वैतवादी भाष्यकार आचार्य्य पंचदशीकार प्रभृति पहले दलभुक्त नहीं होने पाए। मिस्टर ब्रैडला की भाँति इन लोगों पर कंसरवेटिवों ने बड़ा आक्षेप किया किंतु अंत में लिबरलों की उदारता से उन के समाज में इनको स्थान मिला था।

दोनों दलों के मेमोरियल तयार कर स्वाक्षरित होकर परमेश्वर के पास भेजे गए।—एक में इस बात पर युक्ति और आग्रह प्रगट किया था कि केशव और दयानंद कभी स्वर्ग में स्थान न पावैं और दूसरे में इसका वर्णन था कि स्वर्ग में इनको सर्वोत्तम स्थान दिया जाय।

ईश्वर ने दोनों दलों के डेप्यूटेशन को बुलाकर कहा "बाबा अब तो तुम लोगों की 'सैल्फगवर्नमेंट' है। अब कौन हम को पूछता है, जो जिसके जी में आता है करता है। अब चाहे वेद क्या संस्कृत का

अक्षर भी स्वप्न में भी न देखा हो पर लोग धर्म विषय पर वाद करने लगते हैं। हम तो केवल अदालत या व्यवहार या स्त्रियों के शपथ खाने को ही मिलाए जाते हैं। किसी को हमारी डर है? कोई भी हमारा सच्चा 'लायक' है? भूतप्रेत ताजिया के इतना भी तो हमारा दरजा नहीं बचा। हम को क्या काम चाहे वैकुंठ में कोई आवे। हम जानते हैं चारों लड़कों (सनक आदि) ने पहले ही से चाल बिगाड़ दी है। क्या हम अपने बिचारे जयविजय को फिर राक्षस बनवावें कि किसी का रोकटोक करें। चाहे सगुन मानो चाहे निर्गुन, चाहे द्वैत मानों चाहे अद्वैत, हम अब न बोलेंगे। तुम जानों स्वर्ग जाने।"

डेप्यूटेशन वाले परमेश्वर की ऐसी कुछ खिजलाई हुई बात सुनकर कुछ डर गए। बड़ा निवेदन सिवेदन किया। कोई प्रकार से परमेश्वर का रोष शांत हुआ। अंत में परमेश्वर ने इस विषय के बिचार के हेतु एक 'सिलेक्टकमेटी' स्थापन की। इसमें राजा राम मोहन राय, व्यासदेव, टोडरमल, कबीर प्रभृति भिन्न भिन्न मत के लोग चुने गए। मुसलमानी-स्वर्ग से एक 'इमाम', क्रिस्तानी से 'लूथर', जैनी से पारसनाथ, बौद्धों से नागार्जुन और अफरीका से सिटीवायो के बाप को इस कमेटी का 'एक्स अफ़ीशियो मेंबर' किया। रोम के पुराने 'हरकुलिस' प्रभृति देवता जो अब गृह सन्यास लेकर स्वर्गही में रहते हैं और पृथिवी से अपना संबंध मात्र छोड़ बैठे हैं, तथा पारसियों के 'जरदुश्तजी' को 'कारेस्पांडिंग आननेरी मेंबर' नियत किया और आज्ञा दिया कि तुम लोग इस सब कागज पत्र देख कर हम को रिपोर्ट करो। उनकी ऐसी भी गुप्त आज्ञा थी कि एडिटरों की आत्मागण को तुम्हारी किसी 'काररवाई' का समाचार तब तक न मिलै जब तक कि रिपोर्ट हम न पढ़ लें नहीं ये व्यर्थ चाहे कोई सुनै चाहे न सुनै अपनी टाँय टाँय मचा ही देंगे।

सिलेक्ट कमेटी का कई अधिवेशन हुआ। सब कागज पत्र देखे गए। दयानन्दी और केशवी ग्रंथ तथा उनके उनके प्रत्युत्तर और बहुत से समाचार पत्रों का मुलाहिज़ा हुआ। बालशास्त्री प्रभृति कई कंसरवेटिव और द्वारकानाथ प्रभृति लिबरल नव्य आत्मागणों की

इस में साक्षी ली गई। अंत में कमेटी या कमीशन ने जो रिपोर्ट किया उसकी मर्म बात यह थी कि :—

"हम लोगों की इच्छा न रहने पर भी प्रभु की आज्ञानुसार हम लोगों ने इस मुकदमे के सब कागज पत्र देखे। हम लोगों ने इन दोनों मनुष्यों के विषय में जहाँ तक समझा और सोचा है निवेदन करते हैं। हम लोगों की सम्मति में इन दोनों पुरुषों ने प्रभु की मंगलमयी सृष्टि का कुछ विघ्न नहीं किया वरंच उस में सुख और संतति अधिक हो इसी में परिश्रम किया। जिस चंडाल रूपी आग्रह और कुरीति के कारण मनमाना पुरुष धर्मपूर्वक न पाकर लाखों स्त्री कुमार्ग गामिनी हो जाती हैं, लाखों विवाह होने पर भी जन्म भर सुख नहीं भोगने पातीं, लाखों गर्भ नाश होते और लाखों ही बाल हत्या होती है, उस पापमयी परम नृशंस रीति को इन लोगों ने उठा देने में अपने शक्यभर परिश्रम किया। जन्मपत्री की विधि के अनुग्रह से जब तक स्त्री पुरुष जीऐं एक तीर घाट एक मीर घाट रहैं, बीच में इस वैमनस्य और असंतोष के कारण स्त्री व्यभिचारिणी पुरुष विषयी हो जायँ, परस्पर नित्य कलह हो, शांति स्वप्न में भी न मिलै, वंश न चलै, यह उपद्रव इन लोगों से नहीं सहे गये। विधवा गर्भ गिरावैं, पंडित जी या बाबू साहब यह सह लेंगे, वरंच चुपचाप उपाय भी करा देंगे, पाप को नित्य छिपावेंगे, अंततोगत्वा निकलही जायँ तो संतोष करेंगे, पर विधवा का विधिपूर्वक विवाह न हो, फूटी सहेंगे, आँजी न सहेंगे, इस दोष को इन दोनों ने निःसंदेह दूर करना चाहा। सवर्ण पात्र न मिलने से कन्या को वर मूर्ख अंधा वरंच नपुंसक मिले तथा वरको काली कर्कशा कन्या मिले जिसके आगे बहुत बुरे परिणाम हों, इस दुराग्रह को इन लोगों ने दूर किया। चाहे पढ़े हों चाहे मूर्ख, सुपात्र हो कि कुपात्र, चाहे प्रत्यक्ष व्यभिचार करें या कोई भी बुरा कर्म करें, पर गुरू जी हैं, पंडित जी हैं, इनका दोष मत कहो, कहोगे तो पतित होगे, इनको दो, इनको राजी रक्खो; इस सत्यानाश संस्कार को इन्होंने दूर किया। आर्य जाति दिन दिन ह्रास हो, लोग स्त्री के कारण, धन के वा नौकरी व्यापार आदि के लोभ से,

मद्यपान के चसके से, बाद में हार कर राजकीय विद्या का अभ्यास करके मुसल्मान या क्रिस्तान हो जायँ, आमदनी एक मनुष्य की भी बाहर से न हो केवल नित्य व्यय हो, अंत में आर्यों का धर्म और जाति कथाशेष रह जाय, किंतु जो बिगड़ा सो बिगड़ा फिर जाति में कैसे आवेगा, कोई भी दुष्कर्म किया तो छिपके क्यों नहीं किया, इसी अपराध पर हजारों मनुष्य आर्य पंक्ति से हर साल छूटते थे, उसको इन्होंने रोका। सब से बढ़ कर इन्होंने यह कार्य किया, सारा आर्यावर्त जो प्रभु से विमुख हो रहा था, देवता बिचारे तो दूर रहे, भूत प्रेत पिशाच मुरदे, साँप के काटे, बाघ के मारे, आत्म हत्या करके मरे, जल, दब या डूब कर मरे लोग, यही नहीं मुसलमानी पीर पैगंबर औलिया शहीद वीर ताजिया गाजीमियाँ, जिन्होंने बड़ी मूर्ति तोड़ कर और तीर्थ पाट कर आर्य धर्म विध्वंस किया, उन को मानने और पूजने लग गए थे, विश्वास तो मानों छिनाल का अंग हो रहा था, देखते सुनते लज्जा आती थी कि हाय ये कैसे आर्य हैं, किससे उत्पन्न हैं, इस दुराचार की ओर से लोगों का अपनी वक्तृताओं के थपेड़े के बल से मुँह फेर कर सारे आर्यावर्त को शुद्ध 'लायल' कर दिया।

'भीतरी चरित्र में इन दोनों के जो अंतर हैं वह भी निवेदन कर देना उचित है। दयानंद की दृष्टि हम लोगों की बुद्धि में अपनी प्रसिद्धि पर विशेष रही। रंग रूप भी इन्होंने कई बदले। पहले केवल भागवत का खंडन किया। फिर सब पुराणों का। फिर कई ग्रंथ माने कई छोड़े। अपने काम के प्रकरण माने अपने विरुद्ध को क्षेपक कहा। पहले दिगंबर मिट्टी पोते महात्यागी थे। फिर संग्रह करते करते सभी वस्त्र धारण किये। भाष्य में भी रेल तार आदि कई अर्थ जबरदस्ती किए। इसी से संस्कृत विद्या को भली भाँति न जानने वाले ही प्रायः इनके अनुयायी हुए। जाल को छुरी से न काट कर दूसरे जाल ही से जिस को काटना चाहा इसी से दोनों आपस में उलझ गए और इसका परिणाम गृह विच्छेद उत्पन्न हुआ।

"केशव ने इनके विरुद्ध जाल काट कर परिष्कृत पथ प्रकट किया। परमेश्वर से मिलने मिलाने की आड़ या बहाना नहीं रखा। अपनी भक्ति की उच्छलित लहरों में लोगों का चित्त आर्द्र कर दिया। यद्यपि

ब्राह्म लोगों में सुरा मांसादि का प्रचार विशेष है किंतु इसमें केशव का कोई दोष नहीं। केशव अपने अटल विश्वास पर खड़ा रहा। यद्यपि कूचबिहार के संबंध करने से और यह कहने से कि ईसामसीह आदि उससे मिलते हैं, अंतावस्था के कुछ पूर्व उन के चित्त की दुर्बलता प्रकट हुई थी, किंतु वह एक प्रकार का उन्माद होगा वा जैसे बहुतेरे धर्म प्रचारकों ने बहुत बड़ी बातें ईश्वर की आज्ञा बतला दीं वैसे ही यदि इन बेचारे ने एक दो बात कही तो क्या पाप किया। पूर्वोक्त कारणों ही से केशव का मरने पर जैसा सारे संसार में आदर हुआ वैसा दयानंद का नहीं हुआ। इस के अतिरिक्त इन लोगों के हृदय के भीतर छिपा कोई पुन्य पाप रहा हो तो उस को हम लोग नहीं जानते इस का जानने वाला केवल तूही है।"

इस रिपोर्ट पर विदेशी मेंबरों ने कुछ क्रुद्ध होकर हस्ताक्षर नहीं किया।

रिपोर्ट परमेश्वर के पास भेजी गयी। इस को देख कर इस पर क्या आज्ञा हुई और वे लोग कहाँ भेजे गए यह जब हम भी वहाँ जायँगे और फिर लौट कर आसकेंगे तो पाठक लोगों को बतलावेंगे। या आप लोग कुछ दिन पीछे आपही जानोगे।*

गुरु बिरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 1354
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

* मित्रविलास खंड ८ सं० ४० ( १६ जून सन् १८८५ ई० )